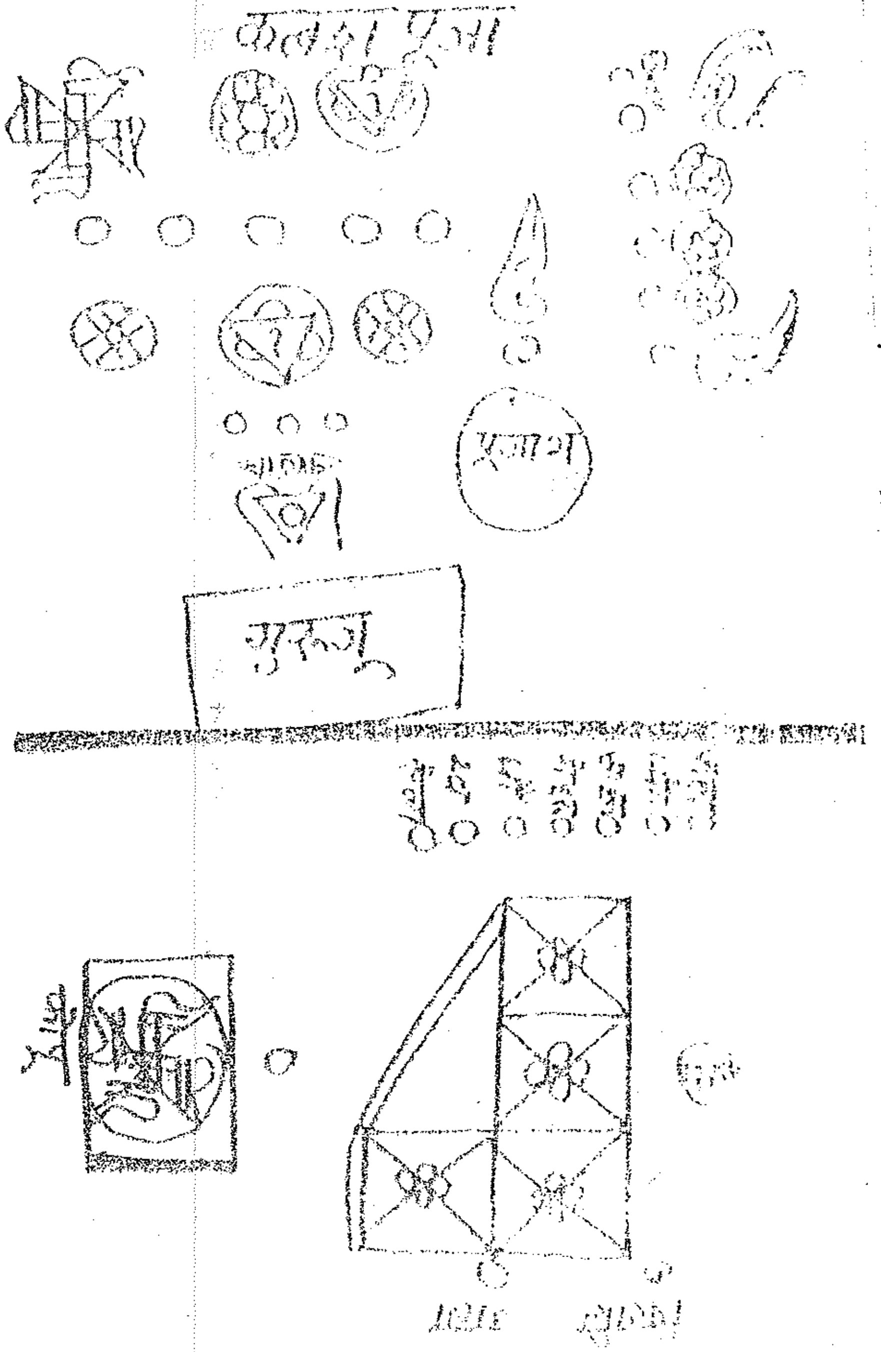
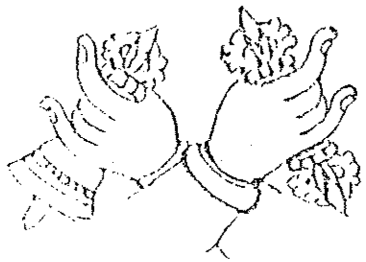


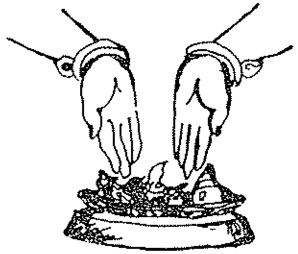
पिण्ड विधान



लेखक
हेराचन्द्र वज्राचार्य

प्रकाशक
बौद्ध कर्म काण्ड विद्यापीठ
चतुर्ब्रम्ह महाविहार
साकोथा, ख्वप:

पिण्ड विधान



लेखक
हेराचन्द्र वज्राचार्य

प्रकाशक
वौद्ध कर्म काण्ड विद्यापीठ
चतुर्ब्रम्ह महाविहार
साकोथा, ख्वपः

लेखक
हेराचन्द्र बज्राचार्य

सल्लाहकार
पद्मचन्द्र बज्राचार्य

कम्प्यूटर सेटिङ्ग
राज कम्प्यूटर सर्भिस
क्वाछें–११, ख्वप:
फोन–६१३५६६

न्हापां :

मू :

वि.सं. २०५७ ने.सं. ११२० बु.सं. २५४४

प्रकाशक
बौद्ध कर्म काण्ड विद्यापीठ
चतुर्ब्रम्ह महाविहार
साकोंथा

जिगु अनुरोध



हेराचन्द्र बज्राचार्य

झिगु थ्व कुल विहार चतुर्ब्रम्ह महाविहार साकोंथा त्वा,वडानं. ११ स्थित टोलय् विराजमान जुया विज्यापिं कुल देवता,दिपंकर तथागत, पद्मपाणी लोकेश्वर, विश्वकर्मा आदि देवता पिनिगु चरण कमले जिगु कोटी कोटी वन्दना ।

थ्व विहारय् विराजमान जुया विज्याना च्वंम्ह दिपंकर तथागतया जजमानपिं आपालं दु । तर, जजमानपिंथाय् पुजा यावनिपिं धासा तम्ह: मदु । अथेजुगुया कारणं जिं सगु स्युगु पुजा विधि स्येने कने धका २०५६ साल कार्तिक ८ गते सोमवार पारू कुन्हुया दिनस: बौद्ध कर्म काण्ड विद्यापीठ स्थापना यानागु जुल । थ्व विद्यालयस व्वनेगुया लागि पिण्ड विधान नामक पुस्तक च्वयागु जुल। थुकि अद्योवाक्य, गुरूमण्डल, कलशपुजा, देवपुजा, पिण्ड–विधान तक्क दुथ्याकागु जुल । थ्व विहारया दुज संघ परिवारपिं पाखें थ्व पुस्तक व्वना सयेका बौद्ध कर्मकाण्ड चलेयाये फयेमा धका आशा यानागु जुल ।

हेराचन्द्र बज्राचार्य
तेखाचो–१६,चिभागा:
ख्वप:

बिषय सुचि

निसल कायेगु वाक्ये

ॐ अद्यो स्वेत वराह कल्पे वैवस्वेत मनंत्तरे सत्य पद्मागिरी त्रैतायां वज्र कुतक द्वापरे गौश्रिग गिरी कलौ गोपुच्छ पर्वते चतुंजुग निवासिते श्री स्वयम्भु चैत्य स्थाने अष्ट वैतराग सन्निधाने नेपाल देशे वाक्य मत्यायां पुर्व कुले कौशि कायां पश्चिम कुले शिला नदिया उतर कुले श्री विरूपाक्ष्ये देवता निवासिते खगानना श्री गुह्येयोगे श्वर रक्षण करे पशुपती सन्नीधाने आर्यावर्त देशे इहै वपुण्य भूमौ निवासित अद्यान अद्योह ॥

अस्मीन वर्णे षष्टी सम्वत सराना मध्ये ....नाम संम्वत सरे श्री सूर्य दक्षिणायणे उत्तरायणे...... ऋतौ....... मासे शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष..........तिथौ......नक्षत्र.....योगे..... कर्ण महोतरे......वारसरे.....राशी गते भास्करे राशी गते चन्द्रमसी ॥

दानपती जजमानसे नेपाल मण्डले भगत पत्नी भक्तापुर महानगरे सुगत श्री.......... नाम महाविहारे वस्मीत वज्राचार्य फलाना प्रमखानां तस्यो

... नीमनन पिस्टीका स्थापित त्रीप्तीका अन्न दानं संकल्पर्यामि ॥

॥ दक्षिणा कायें ॥

मञ्जुश्री कुमार भूताय वोधि सत्वाय महासत्वाय महाकारूणीकाय यथा श्रद्धा गुरू दक्षिणा सकल्पर्यामीहम् ॥

सुर्यार्घ पूजा याये

॥ नसला कायें पूजाभा थियें ॥

ॐ ह्रिं स्वाहा ३॥ ॥ ॐ अमृत जिवन्तिय स्वाहा ॥ ॐ काग विशोधने स्वाहा ॥ ॐ पोक्षण प्रतिच्छ स्वाहा ॥ तत जथा जजमास्ये सर्वा अधिष्ठभय शान्ति कामनार्थ अतिताना गत वुद्धान प्रत्युत्पन्न महात्मनाम दशदिग समस्थितान वुद्धाना प्रज्ञापारमिता नमो नमः गुरू श्री वज्रसत्वंच गुरू वज्रधर नमो मैत्री करूणा मुद्दितो उपेक्षा चर्तुवर्ग विहाराणं भावयत सुश्रीय नमो नमः उत्तम श्रीय नमः महामञ्जुश्रीयं नमो नमः

अद्यो स्वेत वराह कल्पे वैवस्वेत मनतरे सत्य पद्मगिरि त्रैतायां वज्रकूतक द्वापरं गौश्रिग गिरि कलौ गोपुच्छ पर्वते चर्तुजुग निवासिते श्री स्वयम्भू चैत्य स्थाने अष्ट वैतराग सन्निधाने नेपाल देशे वाक्य मत्यायां पूर्व कूले कौशिकागां पश्चिम कूले शिला नदिया उत्तर कुले श्री विरूपाक्ष्ये देवता निवासिते खगानना श्री गुह्येयोगेश्वर रक्षण करे पशुपती सन्निधाने आर्यावर्त देशे इहै वपुण्य भूमौ निवासित अद्यान अद्योह ॥

अस्मीन वर्षे षष्टी सम्वत सराना मध्ये अमुक नाम सम्वत सरे श्री सूर्ये दक्षिणायणे उत्तरायणे

अमुक ऋतौ अमुक मासे शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष अमुक पूण्य तिथौ अमुक नक्षत्र अमुक योगे अमुक कर्ण महोतरे अमुक वारसरे अमुक राशी गते भास्करे अमुक राशीगते चन्द्रमसी ॥

दानपती जजमानसे नेपाल मण्डले भगत पतनी भक्तापुर महानगरे सुगत श्री अमुक नाम महाविहारे काशी गोत्रत्पन्न (शिलाकार) (रंजनकार) (चित्रकार) (मानन्धर) अमुक शान्ति स्वस्ती आयु आरोग्य वृद्धि फल प्राप्ति कामनार्थ तस्मित दिने कूलदेवता स्वस्त देवता ईस्त देवता चरणे यथासक्त भावार्थ पूजाकर्म कामनार्थ यतत पून्यण य जजमानस्ये अर्थ धर्म काम मोक्ष चर्तुवर्ग फल प्राप्ति भवन्तु कामनार्थ, रोग, शोक, कलह, उपद्र, भय, शान्ति निवानार्थ ईड कमण्डलु पुष्प भाजन संकल्पर्यामी ॥

// पूजाभा ३ अनियाये //

आदौ कल्याण मध्ये कल्याण पर्जे वतसान्त कल्याण स्वर्थ सुवेजन के वलं परिपूर्ण परि शुद्ध पर्य वदात व्रम्हचर्य संम्प्रका समयतिस्मह ॥

// पूजाभा लःल्हाना काये //

नमस्ते डाक डाकिने शुध्द धर्म स्वभावक अधुना गुह्ये पूजार्थ रहस्य मण्डलं कृतं भिक्षुना वज्र हितातु गुरू चित समाहित ॥

// जपयाये // स्वभाव सुधा नये //

भगवान श्री ३ द्रादस सूर्य देवता पुजनार्थ चरणे स्वभाव सुधा सर्व धर्माना स्वभाव सुद्धो हं ॥

पं ३ आकर्ष ॐ वज्र कृश जः ॥ ॐ वज्र पाश हं ॥ ॐ वज्र स्फोत वं ॥ ॐ वज्रा वेश हो ॥

// धुं केने //

भगवन अमुक विद्याराज नमस्तुते कर्तु मिछा मिते नाथ प्रतिष्ठान दया मया सिख्याना मनुकंपाय वोधि चित्त दयायच तमेन भगवन तस्य भगवन्तु कर्तु महसि ॥ समन्वा हरतुमां वुद्धा जगत चक्र क्रियास्तथा फलस्टा वोधि सत्वातु याचानि दिव्य चक्षुणा अमुकोह महा वज्री प्रतिष्ठा ममुकस्यतु कारिष्यामी ततोनुन सानिधं कर्तु महसि ॥

// किग काया विल्ली याये ध्यान //

अकार परमोद भुतं प्रभाते सुप्रकारणं उदिता दिनेस प्राप्त जगदा नन्द कारक प्राप्ते प्रभा समस्तानां सूर्य मुदित भाषितं ॥ श्री सूर्य स्वविते देह प्रकाश जगदा नना त्रैलोक्ये दिपक रूप लोकाना चक्षुर्मुतय तिमिर करह नार सर्वाधि दिपनं

पन । द्वादशां गुल भावेन बक्त्रं विन्दु रूपन मागे समासिनि । सर्व द्वादश राशि बन्धरे । खंद त्रतु भवते प्राप्त द्वादशा दिव्य रूपक ग्रहाना मण्डल मध्ये हरि दसे समासिनी इत्येव ध्यान संध्यायन पूष्पादि प्रति पुजयत ॥

// किरनार्ते //

नमस्ते सर्व व्यापि गगना विपानी जिनत्री धानुक महाराज पन्च वृद्ध नमस्तुते ॥

// ध्यान //

// किग जल नया पजा याये //

भगवान श्री ३ द्वादस सूर्य देवता प्रत्येर्थ चरण कमले हस्तार्घ नमः ॥ पादार्घ नम प्रतेघ नमः ॥

// लिन्हं तिके //

ॐ वज्र गन्धे स्वाहा ॥

// स्वाँ क्वायें //

ॐ वज्र पुष्पे स्वाहा

// धुं कॆने //

ॐ वज्र धुपे स्वाहा

// नैवद्य छ्वाये //

ॐ वज्र नैवद्य स्वाहा

// मत विये //

ॐ वज्र दिपे स्वाहा

// दुरु छ्वाये //

ॐ घृत क्षिर अमृत गो दुग्ध धारे स्वाहा

// पुष्प न्यान याये -१२ स्वाँ वोय //

- ॐ आदित्याय नम स्वाहा ॥
- ॐ दिवा कराये नम स्वाहा ॥
- ॐ भास्कराय नम स्वाहा ॥
- ॐ रवि रूप्त भाय नम स्वाहा ॥
- ॐ त्रैलोक्य लोचनाय नमः स्वाहा ॥
- ॐ गर्भस्तीय नमः स्वाहा ॥
- ॐ सविता सुवे नमः स्वाहा ॥
- ॐ भानुवेय नमः स्वाहा ॥
- ॐ सहस्रा वन्सुवे नमः स्वाहा ॥
- ॐ विण्डु विश्व मण्डलाय नम स्वाहा ॥
- ॐ हरि दसे तुमिरे नम स्वाहा ॥
- ॐ सुयार्य नम स्वाहा ॥

॥ किग तानें ॥

आदित्य प्रथम नाम द्वितीयत् दिवाकर तृतीय भास्कर प्रोक्त चतुर्थ रविरूच्येते गर्भस्ति पञ्चम नाम ॥ पष्टमे सवितानन्द ॥ अष्टमे भानु सुदनं ॥ नवमे सहस्रा वतसु ॥ दशमे विदु रूपकं ॥ तृसिमे दसेनांम ॥ द्वादश सूर्य मे वच ॥ द्वादसे हरते व्याधि कुष्ट पातक नासन ॥ नागसं भव संकासं पद्म राग समप्रमं ॥ सप्ता स्वारथ मारूधं वज्र सूर्य नमाम्यहं ॥ कुंद तुषार संकल्पं फल प्राका दिर्भिवृत ॥ हंसासना समासिनं निसाकरं नमाम्यहम् ॥

॥ ताय पूजा याये ॥

ये धर्मा हेतु प्रभावा हेतु तेषां तथागत ॥ हे वधतेषा चयो निरोध एवं वादि महा श्रवणम् ॥

॥ अर्घयाये ॥

ॐ यते स्वरूपि वुद्धा भगवन्त सुगतो लोक विदनुत्तर ॥ पुरूष दम्ये सारथि सास्ता देवा नांच मनुष्यानांच वुद्धो भगवान श्री द्वादस सूर्य देवता पादुका चरण कमले अर्घं प्रतिच्छ स्वाहा ॥

॥ शंप पूजायागे ॥

शंप निधा नाय नमः॥ पद्म निधा नाय नमः ॥ जल निधा नाय नमः ॥

॥ विसर्जन यागे ॥

सत्वोव सर्व सत्वानां सिद्धि दत्वा यथानुगा गच्छध्वं वुद्ध विषये पुनरागमनायच स्थानं गच्छध्वं द्वादश सूर्य देवता स्वः स्वः स्थाने प्रवेश विसर्जनम् ॥

॥ इति सुर्याघ पूजा विधि समाप्त ॥

भावना पूजा

न्हापां मावव पोनाम च्वोय ॥ पूजा मनग्न गागे ॥ अघो इत्यादि ॥

॥ स्वां जाकि न्ल्हाना कागं ॥

नमस्ते डाकडाकिने शुद्ध धर्म स्वभावक अधुनां गुह्य पूजार्थ रहस्य मण्डलंकृत भिक्षुणा वज्र हिन्वात् गुरू चित समहित ॥

स्वां जाकि जगगागे ॥ ध्यान ॥

अद्यमे सफलं जन्म सफलं जिवितंञ्चमे ममय सर्वदेवानां भाविताहं नमंसयो अवैवर्ति भविष्यामी वोधिचित्तै कचेनसा तथागत कुलोत्तपती ममादिश्या नशंसयो अग्रोमे दिवसे हेद्यो यज्योमे ह्यनुत्तर सन्नि पात भवेत हृद्य सर्व वुद्ध निमन्त्रणा ॥

॥ स्वभाव शुद्धा तये ॥

॥ धुं केने ॥

भगवन अमुक विद्यागजं नमस्तुते कर्तुमिच्छा मिते नाथं प्रतिस्थानं दयामया सिख्यानां मनुंक पाय वोधिचित्त दयायच तमेन भगवन तस्य भगवन्तु कर्तुमर्हसी ॥ समन्वा हरतुमां वुद्धा जगत चक्र क्रियास्थता फलस्ता वोधि सत्वातु याचानि दिव्य

चक्षुणां अमुकोहं महावज्री प्रतिस्था ममुकस्यतु करिष्यामी ततोनुनं सानिधं कर्तुमर्हसि ॥

॥ किग ताने ॥

नमस्ते सर्व व्यापि सुगताधि पति जिनं त्री धातुक महाराजं पञ्च वुद्ध नमस्तुते ॥

गुरू मण्डल दने

॥ किया क्या विन्ती याये ॥

ॐ नम श्री वज्र सत्वाय ॥ गुरू बुद्ध ॥ गुरू धर्म ॥ गुरू सघं तथैवच ॥ गुरू वज्रधर श्रीमान तस्मै श्री गुरूवे नमः ॥ ॐ नमः श्री वज्र सत्वाय् ॥

॥ मण्डले तं ह्नुवग ॥

ॐ गुरू आजा हूं ॥

॥ अंग पुजा याये ॥ अन्तनन

ॐ वं वज्रो दके हूं स्वाहा ॥

॥ किया जल तया लोपगा नग ॥

यथा हिजा तमात्रेण स्नापिता सर्व तथागता तथाहं स्नानं पयिस्यामि सुधं दिव्य नवारिना ॥

॥ जलं म्हयु हा हा याये ॥

ॐ सर्व तथागत अभिषेक समश्रीय हूं

॥ स्वन्ना नाग ॥

ॐ ह्रिं स्वाहा ॐ ह्रिं अमत जिवन्तीय स्वाहा ॥ ॐ नाग विशोधने स्वाहा ॥ ॐ प्रोक्षण प्रतिच्छ स्वाहा ॥

॥ पुजामा विये ॥

ॐ नमो भगवते पुष्प केतु राजाय तथागता यार्हते सम्यक सम्वुद्धाय तदेथा ॐ पुष्पे पुष्पे महा पुष्पे सु पुष्पे पुष्प संभवे पुष्प पुष्पा वकिरणे स्वाहा ॥

॥ पुजामा किया अनियाये ॥

आदौ कल्याण मध्ये कल्याण पर्जे वतसान्त कल्याण स्वर्थ सुवेजन के वलं परिपुर्ण परि सुद्ध पर्य वदात ब्रह्म चर्य सम्प्रका समर्यतिस्मह॥

॥ स्वा स्वांगे मण्डले नये ॥

ॐ आह् हिरण्य वज्रा सते हूं ॥

॥ स्वा स्वांगे अब सव नने ॥

ॐ सर्व पापा नगनग हूं ॥ सर्व पापा नागनग हूं ॥

॥ स्वा स्वांगे स्याने नये ॥

ॐ मणि धरि वाज्रणि महाप्रति सरे रक्षा रक्षा हूं हूं फट् स्वाहा ॥

॥ मण्डले सिन्हं तिका बहे ध्याख धम्हं तियं ॥

ॐ वज्र तिलक विभूषणे स्वाहा ॥

॥ मण्डले जल छुतुलु तयं ॥

ॐ वज्र दके हूं ॥ ॐ वज्र गोमये हूं ॥ ॐ वज्र भूमे सुलेखे सर्व तथागता धिष्ठाना धिष्ठन्तु स्वाहा ॥

॥ स्वाँ किगु जल तया मण्डले हायेके ॥

दानं गोमय मम्बुनाच सहितं शीलं च समार्जनं क्षान्ति क्षुद्रक पिपि लिका गपनय वीर्य क्रियास्थापनम् ॥ ध्यानं तक्षण मेक चिन्त करणं प्रज्ञा सुरेखो ज्वला एतो पारमिता पतडेवल भगती कृत्वा मुणि मण्डलं भवतु कनकवर्णः सर्व रोगै विमुक्त । सुरमनुज विशिष्टश्चन्द्र वदीप्ति कान्ति धनकन कसमृध्दि जार्यते राजवंशे सुगत वरगृहेस्मिन कार्य कर्माणि कृत्वा ॐ सुरेखे सर्व तथागता धिष्ठाना धिष्ठन्तु स्वाहा ॥

॥ स्वाँ छुफो म्हयपिया मण्डले तयं ॥

ॐ सर्व विघ्नान्नुसारये हूं॥

॥ किगु कया विन्ति यायें ॥

ॐ मन्त्रा धिष्ठित भूमि मध्ये यें कारादि चर्नाविजं सजातं महा भूतं वायु अग्नी जलावलि मण्डलो परि सुं कारो रत्न मेरु मध्ये रत्न सिंहा सनस्थीत पद्मचन्द्रे श्री वज्र सत्व द्विभूज एक मुखं शुक्ल वर्ण वज्र वज्र घण्टा धर विचित्रा भरण भूषितं शिरसिची वरधारिणां नील वर्ण अक्ष्योभ्यलं कृत मौलिनं गुरु भट्टारकं ध्यात्वा ॥ जः हूं वः होः ॥ पाद्या चमनं अर्घ प्रतीच्छ स्वाहा ॥

॥ मण्डले जल छुतुलु तयं ॥

ॐ चन्द्रार्वर्क विमले स्वाहा ॥

॥ स्वाँ छुकं म्हयपिया मण्डले तयं ॥

ॐ श्री वज्र सत्व पाद्यं प्रतिच्छ स्वाहा ॥

॥ मण्डले २१ स्वाँ व्वये ॥

- ॐ हः महा मध्ये मेरुवे नमः ॥ मध्य ॥
- ॐ हुं: उर्ध्वं मध्ये मेरुवे नमः ॥ जव ॥
- ॐ हां: उर्ध्व मध्ये मेरुवे नमः ॥ खव।
- ॐ यं पूर्व विदेहाय नमः ॥ पूर्व ॥
- ॐ रं जम्बु द्विपाय नमः ॥ दक्षिणा ॥
- ॐ लं: अपर गोडावरियाये नमः ॥ पश्चिम ॥

- ऊं वं उत्तर कुरूवे नमः ।। उत्तर ।।
- ऊं या उप द्विपाय नमः ।। अग्नेय।।
- ऊं रा उप द्विपाय नमः ।। नैकृत्य ।।
- ऊं ला उप द्विपाय नमः।। वायुवे ।।
- ऊं वा उप द्विपाय नमः ।। ईशाने ।।
- ऊं य गज रत्नाय नम : ।। पूर्व ।।
- ऊं र षुरूष रत्नाय नमः ।। दक्षिण ।।
- ऊं ल अश्व रत्नाय नमः ।। पश्चीम ।।
- ऊं व स्त्री रत्नाय नमः ।। उत्तर ।।
- ऊं या खड्ग रत्नाय नमः ।। अग्नेय ।।
- ऊं रा मणि रत्नाय नमः ।। नैत्रृत्य ।।
- ऊं ला चक्र रत्नाय नमः ।। वायुवे ।।
- ऊं वा सर्व निधानाय नमः ।। ईशाने ।।
- ऊं चं चन्द्राय नमः ।। दक्षिणे ।।
- ऊं सूं सूर्य्याय नमः ।। वामे ।।
- ऊं भुवने श्री वज्र सत्व गुरूवे नमः।।

।। पंचपचार पुजा ।।

सिन्हं तिके । स्वाँ छाये । नैबद्य छाये । दुरू छाये । मत बिये ।

।। किग जल तया मण्डले हायके ।।

ऊं चतुरत्नमयं मेरू मष्ट द्विपो पशो भितम्। नाना रत्न समाकिर्ण तद्येनुत्तर दायिनी ।। गुरूभ्यो बुद्ध धर्मे भ्यः संघ भ्यश्च तथैवच । निर्यातया मिभावेन सम्पूर्ण रत्न मण्डलम् ।।

।। किग क्या विन्ति याये ।।

ऊ आः हूं श्री मत्सद् गुरू वर चरण कमलाय सम्यक सम्बुद्ध ज्ञाना वभाष्कराय नमो हूं । नमो हूं ।। नमस्तेतु ।। नमो नमः।। भक्त्या हत्वा नमः स्यामि श्री गुरू नाथ प्रसीदमे ।।

।। किग क्या विन्तियाना च्वने ।।

यस्य प्रसादकिरणै सम्फतितात्मतत्तो रत्न प्रभावा परिकर प्रहन्ता धकारा पश्यन्तु नाभिरा दश भिरा समु चयं तस्मिन नमस्कृतिरियं गुरू भास्कराय ।। नमो बुद्धाय । नमो धर्माय ।। नमो संघाय ।। महत्मे त्रिस्योपि सततं नमः।। सर्व वुद्ध नमस्यामि धर्मञ्च जिनभाषित। संघञ्च शील सम्पन्न रत्नत्रयं नमस्तुते ।। रत्नत्रयं मे शरणं सर्व प्रति दिशाम्यष अनुमोदे जगतपुण्य वुद्धवोधौ दधे मनः ।। आवोधौ शरणं यामि वुद्ध धर्म गणोत्तमम् । वोधिचित्त करोम्यप स्वपरार्थ प्रसिद्धमे ।।

उत्पादयामि परमं वर वोधिचित्तं निमन्त्रयामि अहं सर्व सत्वानां इस्थं चरिष्ये वर वोधिचारिका वुद्धो भवोयं जगतो हिताय देशनां सर्व पापानां पुण्यानाञ्च नुमोदिनां कृतो पवासं चरिष्यामि आयर्याष्टाङ्ग स्पोषधम् ।।

// पाप देशना //

मया बालेन मूढेन यत्किञ्चित पापमागमत् ।
प्रकृत्या बद्धसा बद्धं प्रकृत्या बद्ध मे वच: ॥
तदत्ययं देशयाम्येष नाथानाम ग्रत: स्थित: ।
कृताञ्जलि दु:ख भीतं प्रणिपत्य पुन:पुन:॥ अत्यय मत्ययं त्वेन प्रति गृह्णन्तुनायका: । न भद्रकमिद नाथ न कर्त्तव्य पुनर्मया ॥ यथा ते नथागता यार्हत: सम्यक सम्बुद्धाय बुद्ध ज्ञानेन बुद्ध चक्षुषा जानन्ति पश्यन्ति यत्कुशल मूलं यज्जातिकं पन्निकाया यथादृष्ट यत्स्वभाव यल्लक्षणं यथाधर्म तया सम्विद्यते ॥ तत्कुशलमूलं नित्य मनुत्तरया सम्यक सम्बोद्धौ परिणामितं तथाहं परिणामयामि ॥ तथा ममानेन समानकालं लोकस्य दु:खञ्चसुखोदयंच । हर्तुंच्चकर्तुंच्चसदास्तु शक्ति स्मम प्रकाशं चजथैव भानो: ॥ दृष्ट: श्रुतो नुसमृतिमागतोवा पृष्ठ कथा योगमुपागतोवा ॥ सर्व प्रकारं जगतो हिताय कुर्यात्मजस्र सुखस हिताय् ॥

// वलि कुण्डल जल छ्युलु तये //

ॐ ह्रिं आचमनं प्रतिच्छ स्वाहा ॥ ततो यं कारेण वायु मण्डलं रेंकारेणाग्नि मण्डलं तत्रो परिमुण्डकृत चूडिको परि शुक्ल पद्म भाजनं तत्र भक्तादि परि पूरितं । तत्रोपरि ॐ वृं आँ जिं खं हूँ लाँ माँ पाँ ताँ लं वं कारजाता पञ्चामृत पञ्च प्रदिप रूपं निष्पाद्य ॥

// बलिस १६ स्वाँ तये //

१। ॐ इन्द्राय स्वाहा २। ॐ यमाय स्वाहा
३। ॐ वरूणाय स्वाहा ४। ॐ कुवेराय स्वाहा
५। ॐ अग्नेय स्वाहा ६। ॐ नैऋतये स्वाहा
७। ॐ वायुवे स्वाहा ८। ॐ ईशानाय स्वाहा
९। ॐ उर्द्ध ब्रम्हणे स्वाहा
१०। ॐ अधं पृथ्वीय स्वाहा
११। ॐ सूर्य्या ग्रहा धिपये स्वाहा
१२। ॐ चन्द्रा नक्षत्र धिपतये स्वाहा
१३। ॐ नागभ्य स्वाहा १४। ॐ असुरभ्य स्वाहा
१५। ॐ यक्षेभ्य स्वाहा
१६। ॐ सर्व दिग लोकपालेभ्य चर्तुदर्श लोकपालाय स्वाहा ॥

// पञ्च पचार पूजा //

- ॐ वज्र गन्धे स्वाहा ॥ (गन्धे)
- ॐ वज्र पुष्पे स्वाहा ॥ (पुष्प)
- ॐ धुपे स्वाहा ॥ (धुप)
- ॐ वज्र दीपे स्वाहा ॥ (दीप)
- ॐ वज्र नैवद्य स्वाहा ॥ (नैवद्य)
- ॐ वज्र लाजाय स्वाहा ॥ (ताय्)

॥ लाश्या॥ षोडश १६

१) ऊं वज्र वीणे हुँ ॥ २) ऊं वज्र वंशे त्रां ॥
३) ऊं वज्र मृदङ्गे ह्रिं ॥४) ऊं वज्र मुरूजे अ ॥
५) ऊं वज्र लाश्ये हुँ ॥६) ऊं वज्र माले त्रां ॥
७) ऊं वज्र गीते ह्रिं ॥८) ऊं वज्र नृत्ये अ ॥
९) ऊं वज्र पुष्पे हुँ ॥ १०) ऊं वज्र धूपे त्रां ॥
११) ऊं वज्रांवलोकिते ह्रिं ॥
१२) ऊं गन्ध वज्रे अ ॥
१३) ऊं वज्रा दर्शने हुँ ॥
१४) ऊं रस वज्रे त्रां ॥
१५) ऊं स्पर्श वज्रे ह्रिं ॥
१६) ऊं धर्म धातु वज्रे अ ॥

श्रृंगारा द्वयमे नमस्ते हुँ नमामि हुँ नमो नमः हुँ ॥ ऊं आहुँ ॥ हुँ वज्र ॥ हो घन्ट ॥ टर्किज हुँ ॥ टर्किज हुँ ॥ टर्किज हुँ ॥

॥ किग जलतया वलि हायके ॥

इन्द्रादि वज्रि सहदेव सघै रिमञ्च गृन्हन्तु वलि विशिष्ट । अग्निर्य्यमोनै ऋति भूपतिश्च आपा पतिर्वायु धनाधिपश्च । ईशान भूता धिपतिश्च देवा सउर्द्ध चन्द्रार्कपितामहश्च । देवा समस्ता भुवि येचनागा धराधरा गुत्यगणै समेता ॥ प्रति प्रति त्वेक निवेदयन्तु स्वकः स्वकाश्चैव दिशासु भूता ।

गृन्हन्तु तुष्टा सगणैः समेताः सुपुत्र दाराः सह भृत्य संघै । पुष्पं वलि धूप विले पनंच गृन्हन्तु भुजन्तु पिवन्तु चेद मिदञ्च कर्म सफलं जगन्तु । स्वस्ती स्वाहा ॥

॥ किग नाने ॥

इन्द्रादयो महाराजा लोक पाला महर्द्धिका । कील गन्नि दश क्रोधा विघ्न हन्तायते नमः ॥

॥ तर्पण विन्द क्रिये ॥

ऊं ह हो ह्रिं अं खं स्वाहा ॥ विभ्राणं वर्द्धविम्ब विवस करो घरोला सर्व विन्दु रेखं । मैत्रीय चार रूपं शिर्रशिची वर्तणु मञ्जु घोपं चगात्रम ॥ पद्मस्थं दण्डरूपं कुलितल वपुपै वज्रेण भीमनाद । विज्ञानं ज्ञान रूपं निहीत भव भय पञ्च मर्ति प्रणम्य ॥

॥ शताक्षर ॥

ओं वज्रसत्व समय मनुपालय वज्रसत्व त्वेन प्रतिस्थो दृढो मे भव सुपोपो मे भव सुपोस्यो मे भव अनुरक्तो मे भव सर्व सिद्धिमे प्रयच्छ, सर्व कर्म सुचमे चित्त सुचित्त श्रीयं कुरू हूँ ह ह ह ह हो भगवन सर्व तथागत वज्र मामेण मूंच वज्री भव महा समरा सत्व आः ॥

// तायं विन्ती यायं //

ये धर्मा हेतु प्रभावा हेतु तेपां तथागत हे वर्द्ध तेपां चयां निरोध यवं वादि महाश्रवणम् ॥

॥ ईति श्री गुरू मण्डल समाप्त ॥

सिन्हंम्हु पूजा

सिन्हंयना गण्डलेनगा म्वभाव सुद्रा तये ॥ पञ्चपचार पुजा ॥

// पुष्प न्यास //

- ॐ वं वज्र वारांह्यि हुँ फट् ॥
- ॐ हां यां गार्मानियं हुँ फट् ॥
- ॐ ह्रिं मां मोह्रिनियं हुँ फट् ॥
- ॐ हे ह्रिं सचांर्गनियं हुँ फट्॥
- ॐ हुँ हुँ संत्रास नियं हुँ फट् ॥
- ॐ फट् फट् चन्द्रिकाये हुँ फट् ॥

// त्रिग ताने //

नत्वां श्री वज्र वारांहि मन्त्र मूर्ति जिनेश्वरी अत्यन्ता वरदा भिमा त्रांद्रि सिद्धी वरप्रदा ॥ एवं कारं समागिनं सहजा नन्द रूपिणी प्रज्ञा ज्ञान नमो देवी ईश्वरी श्री वज्रयोगिणी ॥

// विसंजन //

कृत्वोव सर्व सत्वार्थ सिद्धी दत्वा यथानुगा घ्यानं गच्छद्वं वं वज्र वाराही देवता विर्सजन ॥

॥ स्वां सिन्हंतिका छाय ॥

उद्यातारा तर चक्रतो निरधुतो विद्युच्छिता भासुरा दग्धारी त्रितिया त्रैलोक्य सहिता पियूप धारा कुलता वुद्ध ज्ञान रसा विला विकलुखा शानन्दम्ना सोहरा भावां भाव विचारणा विरहिंका पातुवां श्री चण्ड रोपांन् चेत श्री ॥

॥ इतिश्री सिन्हंम्हू पूजा ॥

मण्डपात्र पूजा

मण्डपात्रयात पञ्च पचार पुजा ॥ पुष्प न्यास ॥

- ॐ वारूणि देवीय नमः स्वाहा ॥
- ॐ पूर्णगिरि देवीय नमः स्वाहा ॥
- ॐ अर्घोदरी देवीय नमः स्वाहा ॥
- ॐ जागंधरि देवीय नमः स्वाहा ॥
- ॐ पद्मभाजना देवीय नमः स्वाहा ॥
- ॐ हेमाल देवीय नमः स्वाहा ॥

॥ किरा ताने ॥

निल निलञ्च निलाभा अक्ष्योभ्या संगसंगिनी भक्त्याहंत्वा महंवाक्य अक्षयां भव मामकी ॥

मोहनी फरा

कलश पूजा

कलशया स्वभाव सुद्धा तये ॥ कलश थ्वने वज्र नये ॥ कलशया ध्यान जाकी क्या विन्नी याये ॥

ॐ वज्रां मृतो दकथ हुं ॥ तप्ते तप्ते महा तप्ते स्वाहा ॥ मन्दाकीनी जलरुपं विभाव्य ॥ भ्रर्तिनि वंकारेण परिनतं ना ना रत्न मये कलश माकारजं शुक्ल धर्मोदया तरस्थं विभाव्य ॥ तदनु स्वःस्वः विज चिन्ह परि नामेन स्वःस्वः देवता विचिन्त्य स्व हृद्वि जमयुखा कुसै ज्ञान गत्व मानिय पुरतो दृष्टा पाद्या चमना दिकं कृत्वा तद्यान तत्वं समय सत्व प्रवेशे महा रागेण द्रविभुय वोद्धिचित्त रुपेमति भूतं चितयेत् चिन्हेच समये देवता ज्ञान देवतायकि भूतं चिन्तयत ॥

॥ वज्र तिने ३ ॥

ॐ वज्र रक्ष हुँ ॥ ॐ वज्र रक्ष हुँ ॥ ॐ वज्र रक्ष हुँ ॥

॥ शंपया जल छतुलु कलशय् तये ॥

ॐ सर्व तथागत महायोगय श्वरे हुँ ॥

॥ निलाजन याये ॥ जल छ तुलु नये ॥

ॐ ह्रिं आचमनं प्रतिच्छ स्वाहा ॥

॥ पिजा तये ॥

शुन्ये पुन्ये ज्ञान संभारणा धौक्य धौक्य हुँ फट् ॥

॥ आरति च्याके ॥

ॐ भर भर संभर इन्द्रिय वलि विश्वधनि रु रु चले हुँ हुँ फट् स्वाहा ॥ ॐ अकार मुख सर्व धर्माना माद्यं नुत्पन्नत्वात् ॐ आहुं फट् स्वाहा ॥

॥ इंका पका तये ॥

क्लेश क्लेशारन्ती भय शान्ती विघ्न शान्तिं कुरु भस्मी कुरु हुं फत् स्वाहा ॥

॥ पञ्चपचार पुजायाये ॥

॥ आरती गाले ॥

आदौ कल्याण मध्ये कल्याण पर्य वतशान्त कल्याण स्वरथं सुवेजलं केवलं परि पुर्णं परि शुद्ध पर्य वदात ब्रम्ह चर्य संप्रका समयन्तिश्मह ॥ मञ्जुश्री लोकनाथ जिव वर मकुतो जंवर वज्र सत्व मैत्रीयो वज्रपानी शुकवर एकरो गहुलो भद्र पालो वुद्धो वैरोचनाद्वं त्रीभुवन नॉमितं क्षित निशे पदोपो तुस्ता सर्वार्थ सिद्धी विमलसु मलसु मंगलं वोधि सत्व ॥

निलाजन पिखालखुस तयेके छ्वय्

॥ कलशयात किग जल तया पूजा याये ॥

भगवान श्री ३ सर्व तथागत, महायोगेश्वर, आयुवृद्धि, गणेश, महाकाल, गोमाता, वालकुमारी वैश्वानर, जंभनी, मामकि देवता पुजनार्थ चरण कमले हस्तार्घ नमः पाधार्घ नमः प्रति अर्घनमः स्वाहा ॥

॥ सिन्हं तिके ॥

श्री खण्ड कु कुंम सुशोभित चन्डनानी कुर्वतु ते स तिलका निच वुद्ध संधै ये प्रान्पुवन्ति तिलको प्रमायो वज्र ज्ञामने वज्रज्ञान प्रतिच्छ स्वाहा ॥

॥ स्वान छाये ॥

सुमस्तु हुँ स्वस्ती वकुरूता वुद्ध स्वस्ती दिवा शशक्रका स्वस्ती सर्वाणी भूतानी समागतानी स्थितानी भूमां वथवा चरिक्ष्य कुर्वतु मैत्री सततं वज्र सुदिवा चरात्रौं चचरन्तु धर्म ॥

॥ समे छाय ॥

एक वर्ण समाचारं पञ्चवर्ण समाहित एकाकारन्तु नम स्वाहा ॥ अलिवलि सुन्यताय नम स्वाहा ॥

॥ फलफूल छाय ॥

तारादि फलादि वज्र पुष्पं नमः स्वाहा ॥

॥ मता च्यिे ॥

नेत्रा भिरात्मा वहुरत्न कोशा नराद्धिपा अर्चित पाद पद्मज्ञान प्रतिपात हत मोह ज्वाला ये दिपमाला रचयन्ति तत्र द्रिपोयं शुभयक्षादा शुभ शान्तं सर्वज्ञान प्रशिद्धये ॥

॥ न्या छाय ॥

हुँ कारं परमदेव हुँ कार श्रृष्टि दायका हुँ कारन्तु भवेत सत्य हुँ कारन्तु नमो नमहः ॥

॥ कलशयात पुष्पन्यास ॥

ॐ वैरोचनाय स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ अक्षोभ्याम स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ रत्न संभाय स्वाहा ॥ ३ ॥
ॐ अमृता भवाय स्वाहा ॥ ४ ॥
ॐ अमोघसिद्धये स्वाहा ॥ ५ ॥
ॐ रोचनिय स्वाहा ॥ ६ ॥
ॐ मामकिय स्वाहा ॥ ७ ॥
ॐ पाण्डुराये स्वाहा ॥ ८ ॥
ॐ ताराये स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ आयु वृद्धियात ॥

ॐ आयु वृद्धिये स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ जशो वृद्धिये स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ प्रजा वृद्धिये स्वाहा ॥ ३ ॥
ॐ धन वृद्धिये स्वाहा ॥ ४ ॥
ॐ सुख वृद्धिये स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ गणेश यात ॥

ॐ गं गण पतये नम स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ गणाधिपतये नम स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ लंम्बोदराये नम स्वाहा ॥ ३ ॥
ॐ विध्नेश्वराय नम स्वाहा ॥ ४ ॥
ॐ गणेश्वराय नम स्वाहा ॥ ५ ॥
ॐ गणपति पूजिताय नमःस्वाहा ॥ ६॥

॥ महांकालयात ॥

ॐ महाँ कालय स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ महा कालीय स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ कला लाय स्वाहा ॥ ३ ॥
ॐ चण्डालीय स्वाहा ॥ ४ ॥
ॐ क्रोधाय स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ गो माता यात ॥

ॐ नन्दाय स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ भद्राय स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ जयाय स्वाहा ॥ ३ ॥
ॐ शौम्याय स्वाहा ॥ ४ ॥
ॐ कपिलाय स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ बाल कुमारीयात ॥

ॐ वं वज्र वाराहीय हुं फट ॥ १ ॥
ॐ हां यों यामिनीय हुं फट् ॥ २ ॥
ॐ हिं मों मोहिनीय हुं फट् ॥ ३ ॥
ॐ हें हिं चंचाग्नीय हुं फट् ॥ ४ ॥
ॐ हं हं संत्रासनीय हुं फट् ॥ ५ ॥
ॐ फट् फट् चण्डीकाय हु फट् ॥ ६ ॥

॥ वैस्वानर यात ॥

ॐ वैस्वानराय स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ मानि भद्राय स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ पूर्ण भद्राय स्वाहा ॥ ३ ॥
ॐ धनेन्द्राय स्वाहा ॥ ४ ॥
ॐ वज्र दिपाय स्वाहा ॥ ५ ॥
ॐ अनराय स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ माहनी यात ॥

ऊं जंभनीय स्वाहा ॥ १ ॥
ऊं स्तंभनीय स्वाहा ॥ २ ॥
ऊं मोहनीय स्वाहा ॥ ३ ॥
ऊं आकर्पनीय स्वाहा ॥ ४ ॥
ऊं सर्व दुस्त नप्रसमनिय स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ मामकि यात ॥

ऊं वारूणी देवीय नम स्वाहा ॥ १ ॥
ऊं पूर्णगिरि देवीय नम स्वाहा ॥ २ ॥
ऊं अर्बोदरी देवीय नम स्वाहा ॥ ३ ॥
ऊं जागंधरी देवीय नम स्वाहा ॥ ४ ॥
ऊं पद्मभांजना देवीय नम स्वाहा ॥ ५ ॥
ऊं हेमाल देवीय नम स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ षोडश लाश्या ॥ १६

ऊं वज्र वीण हूं ॥ १ ॥
ऊं वज्र वंशे त्रां ॥ २ ॥
ऊं वज्र मृडङ्गे ह्रीं ॥ ३ ॥
ऊं वज्र मुरूजे अ ॥ ४ ॥
ऊं वज्र लाश्ये हूं ॥ ५ ॥
ऊं वज्र माले त्रां ॥ ६ ॥

ऊं वज्र गीते ह्रीं ॥ ७ ॥
ऊं वज्र नृत्ये अ ॥ ८ ॥
ऊं वज्र पुष्पे हूं ॥ ९ ॥
ऊं वज्र धूपे त्रां ॥ १० ॥
ऊं वज्रा वलोकिते ह्रिं ॥ ११ ॥
ऊं गन्ध वज्रे अ ॥ १२ ॥
ऊं वज्रा दर्शने हूं ॥ १३ ॥
ऊं रस वज्रे त्रां ॥ १४ ॥
ऊं स्पार्श वज्रे ह्रीं ॥ १५ ॥
ऊं धर्म धातु वज्रे अः ॥ १६ ॥

श्रींगारा द्रयमे नमस्ते हूं नमामि हूं नमो नमो हूं ऊं आहूं हूं वज्र हा घण्ठ तर्किज हूं तर्किज हूं तर्किज हूं ॥

वज्र तिने स्वक

॥ किरातानें कलशयात ॥

वन्दे श्री वज्र सत्व भुवन गुरू वरं सर्ववुद्ध भवात॥ नाना रूप नयन तिमिरं भयहरं निमित मेरूशातं ॥ धर्मा धातु मुनिनां जिनगुण नमितं मण्डल वज्र धातु ॥ सर्वा नन्दै करूप परम सिवपद देहिनां मोक्ष हेतु ॥ नमस्ते सर्व व्यापि सुगता धिपती जिनंत्री धातुकं महाराजं पञ्चवुद्ध नमस्तुते ॥

॥ आयुवृद्धियात ॥

आयुवृद्धि जसोवृद्धि वृद्धि प्रज्ञा सुभसंतथा ॥
आयु आरोग्य धनला भंच सप्तते सप्त वृद्धिरस्तु ॥

॥ गणेश यात ॥

हे रंवं परम देव कार्य सिद्धि विनायक ॥
शौभाग्य रूपसं पद्मं देहिमे सुखसंपदम ॥

॥ महांकाल यात ॥

महांकालं कृष्ण वर्ण वुद्ध शाशन रक्षिक ॥
कर्तिकपाल धरं वीरं महांकालं नमास्यहं ॥

॥ गोमातायात ॥

प्रशिद्धिश्च महालक्ष्मी सर्व सौप्य प्रदायका ॥
नन्द्रा भद्रा जया शौम्या वपिलाय् नमस्तुतं ॥

॥ वाल कुमारी यात ॥

नत्वांश्री वज्र वाराही मन्त्र मूर्ति जिनेश्वरी ॥
अत्यन्ता वरदा भीमा ऋद्धि शिद्धि वरप्रदा ॥
एवंकार समासिनं सहजानन्द रूपिनी ॥ प्रज्ञा ज्ञान
नमो देवी ईश्वरी श्री वज्रयोगिनी ॥

॥ वैस्वानरया ॥

रूज्यंसं विजनिजांत पित वर्ण महोज्वलं ॥
पीतावरा धरातेजा वैस्वानरं नमास्यहम् ॥

॥ जभनीयात ॥

जंभनि स्तंभनीश्चैव जगतसांत सनमोहय ॥ सर्व
भयहर नाय दिव्यचक्षुपो ॥

॥ मामकियात ॥

निल निलच निलाभा अक्ष्योभ्या संग संगिनी
भक्त्याहन्वा महंवाक्य अक्ष्योयां भव मामकि ॥

॥ ताय् पूजा याये ॥

ये धर्मा हेतु प्रभावा हे तु तेपां तथागत ॥ हे
वर्ध तेपा चयो निरोध एवं वादि महा श्रवणम् ॥

॥ तर्पण विन्दु विये ॥

नत्वां श्री सहजा नन्द सद्गुरू चरणां भोज्य
भुक्ती मुक्ति फलप्रदं ॥

॥ ईति कलश पूजा समाप्त ॥

देवपुजा

गुम्ह देव जुल । उम्ह देवताया नां कया मत्र म्वाँ किग जपयाना स्वभाव सुद्धा तयें ॥ धुं केंने ॥ निलाजन यायें ॥ देवस्नान याकें ॥

॥ देवस्नान याकें ॥

अद्यो इत्यादी ॥ जतमंगलं सकल सत्व ऋद्धिप्टीतस्य सर्वात्मकस्य वर धर्म कुलात्मकस्य ततमंगलं भवतुते परमाभिषेक ॥

॥ दुरू तयें ॥

दुग्ध स्नानं अव धौंकयामी

॥ घ्यल तयें ॥

घृत स्नानं अव धौंकयामी

॥ कस्ती तयें ॥

मधुस्नानं अव धौंकयामी

॥ पञ्चाकुश तयें ॥

लाँ माँ पाँ ताँ लँ पञ्चामृत पञ्च स्नान अव धौंकयामी ॥

॥ शंखजल तयें ॥

द्वितीय शंख जल स्नानं अव धौंकयामी

॥ न्हायक केंने ॥

प्रीत विम्बु समो धर्मा अच्छा सुरा हिला विला अनु ग्राह्या विला प्याच हेतु कर्म कुलोदभव ॥

॥ म्वाँ जल थुना सकलयात हाःहाःयाकें ॥

सर्व तथागत अभिषेक समश्रिय हूँ ॥

हस्तार्घ पादार्घ तयें ॥ पञ्च पचार पुजा यायें ॥
पुष्प न्यास यायें ॥

॥ सम्वर यात ॥

- ॐ आनन्दाय स्वाहा ॥ १॥
- ॐ परमानन्दाय स्वाहा ॥ २॥
- ॐ विर मानन्दाय स्वाहा ॥ ३॥
- ॐ महजा नन्दाय स्वाहा ॥ ४॥

॥ वज्र वाराही ॥

- ॐ वं वज्र वाराहीय हूँ फट् ॥ १॥
- ॐ हां यों यामिनीय हूँ फट् ॥ २ ॥
- ॐ ह्रिं मो मोहिनीय हूँ फट् ॥ ३॥
- ॐ हे ह्रिं संचारिनीय हूँ फट् ॥४॥
- ॐ हूँ हूँ संत्रासनिय हूँ फट् ॥ ५॥
- ॐ फट् फट् चन्दिकायें हूँ फट् ॥ ६॥

// हे वज्रयात //

- ॐ हे वज्राय स्वाहा ॥ १॥
- ॐ चतु चरणाय स्वाहा ॥ २॥
- ॐ खोदश भुजाय स्वाहा ॥ ३ ॥
- ॐ दिगंवराय स्वाहा ॥ ४॥
- ॐ चर्तुविंशती नेत्राय स्वाहा ॥ ५॥

// नैरात्मायात //

- ॐ नैरात्माय स्वाहा ॥ १॥
- ॐ गौरिय स्वाहा ॥ २॥
- ॐ चौरिय स्वाहा ॥ ३॥
- ॐ वेतालिय स्वाहा ॥ ४॥
- ॐ घस्मरीय स्वाहा ॥ ५॥
- ॐ पुष्कसिय स्वाहा ॥ ६॥
- ॐ दोंविनिय स्वाहा ॥ ७॥
- ॐ सवरिय स्वाहा ॥ ८॥
- ॐ रूधिरीय स्वाहा ॥ ९॥

// जोगाम्वर यात //

- ॐ जोगाम्वराय स्वाहा ॥१॥
- ॐ जोगाम्वरीय स्वाहा ॥ २॥
- ॐ सिंघिनीय स्वाहा ॥ ३॥
- ॐ व्यांघिनीय स्वाहा ॥ ४॥
- ॐ जंवुकिनीय स्वाहा ॥ ५॥
- ॐ उलो किनीय स्वाहा ॥ ६॥

// लोकेश्वर यात //

- ॐ आर्य्यावलो कितेश्वराय स्वाहा ॥ १॥
- ॐ मैत्रियाय स्वाहा ॥ २॥
- ॐ गगण गंजाय स्वाहा ॥ ३॥
- ॐ समन्त भद्राय स्वाहा ॥ ४॥
- ॐ वज्र पानय स्वाहा ॥ ५॥
- ॐ मञ्जु धोपाय स्वाहा ॥ ६॥
- ॐ सवर्णि वर्ण विष्कं भवाय स्वाहा ॥ ७॥
- ॐ क्षिति गर्भाय स्वाहा ॥ ८॥
- ॐ ख गर्भाय स्वाहा ॥ ९॥

// वसुन्धरा यात //

- ॐ वसुन्धराय स्वाहा ॥ १॥
- ॐ वसुन्धरीय स्वाहा ॥ २॥
- ॐ वसुमति प्रियाय स्वाहा ॥ ३॥
- ॐ जमल जलेन्द्राय स्वाहा ॥ ४॥

// ताण्डायाते // घण्टा वादन स्तुति कियनाने //

// सम्वरयात //

सर्वज ज्ञान संदर्श जगदर्थ जगदर्थ प्रसादक ॥ चिन्तामणि रिवोद्भूत श्री सम्वरं नमस्तुते ॥ आनन्द परमश्चैव विरमानन्द सगति भास्वर सहजा गुह्ये तत्वाख्यं पञ्च जिनात्मकगण ॥ गगनाग धितवंदे प्रणमामितु सर्वदा ॥

// वज्रवाराही //

नत्वांश्री वज्र वाराही मन्त्र मूर्ति जिनेश्वरी ॥
अत्येन्ता वरदाभीमा ऋद्धि सिद्धी निवासिनी ॥
येवंकार संमासिनं सहजानन्द रूपिनी प्रज्ञाज्ञान नमो
देवी ईश्वरी श्री वज्र योगिनी ॥

// हे वज्रयात //

श्री हे वज्र महा विरं नैरात्मा चापियोगिनी ॥
पुरिनं मलयस्चैव हे वज्र नाथं नमाम्यहम् ॥

// नैरात्मायात //

निरालवं निराकालं निर्विकल्प स्वरूपिनी
नैरात्मा वरदा देवी नित्य नित्य नमस्तुते ॥

// जोगाम्वरयात //

जोगाम्वरं सदाविरं चक्र मध्ये वेवण स्थित ॥
नाना ज्ञान समुद् भूतं चक्रनाथा यतेनम ॥

// लोकेश्वर यात //

लोकेश्वरं शिल शांत अमोघ गुण शागरं
अमिता भावितं मौलि नमामि ॥ अमोघ पाशनं ह्री
कार संभवनाथं करूणा स्निग्ध मानस ॥ अमोघ
पाश नामानां लोकनाथ नमामिहम् ॥

// वसुन्धरायात //

वसुन्धरा सदा नत्वा दारिद्रा नवतार्शन ॥
साधनो पायका देवी लक्ष्मी सिद्धी वलप्रदा ॥

// नाग पुजा //

ये धर्मा हेतु प्रभावा हेतु तेषां तथागत ॥ हे वर्ध
तेषां चयो निरोध एवं वादित्य महायान श्रवण ॥

// तर्पण यागे //

नत्वां श्री सहजा नन्द सदगुरू चरणा भोज्य
भुक्ती मुक्ति फल प्रदम् ॥

// पटाक्षर यागे //

ॐ वज्र सत्व समय मनुपालय वज्र सत्व
त्वेनं प्रतिष्ठो दृढो मे भव सुतोष्यो मेभव सुपोष्यो
मे भव अनुरक्तो मे भव सर्व सिद्धी मे प्रयच्छ सर्व
कर्म सुचमे चित्त सुचित्त श्रीयं कुरू हूँ हः हः हः
हः हों भगवन सर्व तथागत वज्र मामे मूंच वज्री
भव महा समय सत्व आः ॥ इंद क्रियाहिनं मंत्र
हिनं भावना वाक्य हिनकं अष्ट गण रक्षमा प्रसिद्ध
परमेश्वर क्षमस्व आः ॥

॥ रत्न मण्डल विर्सजन यायें ॥

कृत्वोव सर्व सत्वार्थ सिद्धीं दत्वा यगानुगा गच्छद्दं वुध्द विषय पुनरा गमनयच ॥ ध्यानं गच्छद्दं रत्न मण्डल देवता स्वःस्वः स्थानं विर्सजनम् ॥

पिण्ड विधान

ॐ नमः श्री वज्र सत्वाय:

मावव पोतासं पूजा विधि विधान च्वंय ॥ पूजा विधि ॥ सूर्य्यार्घ ॥ पूजा संकल्प ॥ अद्यो इत्यादि ॥ स्वभाव मुद्रा ॥ गुरू मण्डल ॥ सिन्हंम्हू पूजा ॥ समार्धि ॥ कलश पूजा ॥ जंमनी ॥ मार्मकि ॥ सालाद्य पूजा ॥

॥ पिण्ड थय् विधि ॥

जजमान यात पूजा संकल्प ॥ गुरू मण्डल दंके ॥ कोला संकल्प याके

वाक्य: अद्यो इत्यादि: ॐ नम श्री शाक्ये सिंहाय ॥ जशाते तथागतायां पूर्वंग मध्ये स्वपती पार्रमिता दक्षिणा भिमुखं पिण्ड इत्वा विपश्वी नौ देवता यां शिषिनो विश्व भुस्तथा क्रकुछण्ड प्रशन्नाश्च देवताया महावला कनका क्षेप्य देवेन्द्र श्री मत काश्य पश्य गोत्रेस्य प्रसन्ना शाक्य सिंहस्य व्रम्हेन्द्रा त्रिदशे श्वरा यते देव प्रमुखा नां मार्गत्व यूयं सुगताभा वयम इदं मासनं माश्रीता ॥ अस्मत ॥ कोला वांय् तये ॥

॥ कुश लाय् ॥

कुसासन मू प्रति स्थीतान

॥ हामो लाय् ॥

तिजो काय् भ्यो स्वधा:

॥ दक्षिणा लाये ॥

ताम्र खण्ड दक्षिणा संकल्पयामीहम्

॥ कुसा लपतेलाये ॥

वसुन्धरी पित्री पते भ्यो स्वधा

॥ जलं हा हा याये ॥

अभि खिंचा ते भ्यो स्वधा

॥ हातं तिति याये ॥

अधि पत्रे भ्यो स्वधा

॥ स्वां छक्व छक्व तये ॥

सु पूष्पे भ्यो स्वधा

॥ कुसं ध्यल कस्ती धुना पिण्ड वाले ॥

तिलादौ पथ्यते मूर्धि कुसेन मुख स्व धयो, मधुनां नासिका वाहु थिला मुखं घृतो दरं दोधि चक्षुति जानु भ्याम त्वयन हस्त पादयो अन्नादौ सर्व गात्रेसु जायते वोधि विर्यवान ॥

॥ पिण्ड भाग थये ॥

पिण्ड भाग भ्ये क्षदय क्षदय भ्य स्वधा

Vajracharya's Text has: Om dharmadhatu-bhaga-chedane svaha

कुसया अंगु न्हयाय । च्वयया चैत्य दयके। आखे न्याग ॥

॥ नाय् न्याग तये ॥

ॐ वज्र धातु गर्भे स्वधा

चैत्य स्थापना याये

धर्म धातु देवता सु प्रतिस्थीत वज्र आशने स्वधा

चैत्य स्वधन याये

॥ वैरोचन तथागत यात ॥

ॐ नमो भगवते वैरोचन प्रभकेतु राजाय तथागता यार्हते सम्यक सम्वुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ सुक्ष्मे सूक्ष्मे समे समे शान्ते शान्ते दान्ते दान्ते अस्मारम्वे तरंवे अनारम्वे यशोवती महातेजे निरालम्वे निराकारे निर्वाणे सर्व तथागता धिष्ठाना धिष्ठिते स्वाहा ॥

॥ अक्षोभ्य तथागतयात ॥

ॐ नमो भगवते अक्ष्योभ्य तथागता यार्हतें सम्यक सम्वुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ककनी २ रोचनी २

तृलोचनी २ प्रातनी २ अमोघा मोघ , प्रतिहत सर्वपाप क्षयं करिय स्वाहा ॥ ॥

॥ रत्न सम्भवं तथागतयात ॥

ॐ नमो भगवते रत्न संभवाय तथागतायार्हते सम्येक सम्वुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ रत्ने रत्ने महा रत्ने रत्न किरणे रत्न संभवे रत्न विजे रत्न माला विस्वधने स्वाहा ॥ ॥

॥ अमिताभव तथागतयात ॥

ॐ नमो भगवते अमिताभव तथागता यार्हते सम्येक सम्वुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ अमिते२ अमित संभवे अमित विराजीते अमित विक्रांत गामिनीय स्वाहा ॥

॥ अमोघ सिद्धी तथागत ॥

ॐ नमो भगवते अमोघ सिद्धि तथागता यार्हते सम्येक सम्वुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ सिद्धे २ परम सिद्धे सुसिद्धे सर्वार्थ सिद्धे स्वाहा ॥

॥ पञ्च पचार पूजा याये ॥

॥ पुष्प न्यास याये ॥

- ॐ वैरोचनाय स्वाहा ॥ १॥
- ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा ॥ २॥
- ॐ रत्न सम्भवाय स्वाहा ॥ ३॥
- ॐ अमितां भवाय स्वाहा ॥ ४॥
- ॐ अमोघ सिद्धिये स्वाहा ॥ ५॥
- ॐ रोचनीय स्वाहा ॥ ६॥
- ॐ मामकीय स्वाहा ॥ ७॥
- ॐ पाण्डुराय स्वाहा ॥ ८॥
- ॐ ताराय स्वाहा ॥ ९॥

॥ किया ताने ॥

नमस्ते पञ्च वुद्धानां अक्षोभ्यादि कुलश्चैव मध्ये वैरोचन नाथं पञ्च वुद्ध नमस्तुते ॥

रत्न मण्डल विसजन याये

॥ पिण्ड ग्वारा दयेके ॥

अद्यो ईत्यादि वाक्य : पूर्व वोधि सत्व चर्यायां चलभि वोधिसत्व भवभि सप्त पुरूपे भ्यो सप्ट निरूपे भ्यो युष्मत विधार नार्थ काश्य पश्य गोत्रेभ्यो दिवंगत अमुम नाम ध्यायो एते तण्डुला स घृत समधु दधि दुग्ध सखरा सर्वोत समासा सर्वो उपकरण सहिता सर्व कुतसित्र वज्री काय विदेन्ते

॥ दश फल फूल छाय् ॥

ॐ सर्व वित सर्व पाप विश्व धनी महा वज्रोद्भव दशन् फल दान पारमिता फल पूजां मेघ समुद्र ष्फरण समय हूँ ॥

॥ धुप केने ॥

ॐ सर्व वित सर्व पाप विश्व धनी महा बज्रोद्भव धर्म धूप ध्यान पारमिता धूप पूजा मेघ समुद्र ष्फरण समय हूँ ॥

॥ मत केने ॥

ॐ सर्व वित सर्व पाप विश्व धनी महा बज्रोद्भव ज्वल ज्वल ज्वाल लोक प्रणिधि दीप पूजा मेघ समुद्र ष्फरण समये हूँ ॥

॥ तँला भिला छाय् ॥

तँग राज भिंग राज पित्री पुष्पं प्रतिच्छ स्वधा ॥

॥ किग ताने ॥

वन्धेश्री वज्र सत्व भुवन गुरू वरं सर्ववुद्ध भवांत ॥ नाना रूपं नयन तिमिरं भयहरं निमित्त मेरूशान्त ॥ धर्म धातु मुनिनां जिनगुण नमितं मण्डलं बज्र धातु ॥ सर्वा नन्दै करूप परम सिवपद देहिनां मोक्ष हेतु ॥ नमस्ते सर्व व्यापि सुगताधिपती जिनंत्री धातुकं महा राजं पन्च वुद्ध नमस्तुत्ते ॥

आयु बृद्धि ॥ गणेश ॥ महा काल ॥ गोमाता ॥ बाल कुमारी ॥ वैस्वानर ॥ जमनी ॥

[illegible] ॥ कुल देवता ॥ [illegible] देवता सम्पूर्ण देवता ॥ पिण्डया स्तुती ॥ त्रीप्त्या मृत्वो महा धारो त्रिप्त्या वै तरनि नदि मो पायन वुद्धोत्वं प्रणमामी दिने दिने नमस्ते शाक्य शिहाय धर्म चक्र प्रर्वतक त्रै धातुक जगत सर्व शोधयत सर्व दुर्गती ॥ दान पती ~~~~~~~

॥ ताय पूजा ॥

ये धर्मा हेतु प्रभावा हेतु तेषां तथागत चयो निरोध यवं वाधिते महायानं श्रवणम् ॥

॥ आर्शिवाद बिये ॥

द्यो दक्षिणा तये ॥ स्वगं क्व काय॥

सुमस्तु हूँ स्वस्ती वर्कुतां वुद्ध स्वस्ती देवा ससक्रका ईत्यादि

गुरू पृजा याये ॥ दक्षिणा काय ॥ निसला काय् ॥ दान काय ॥ सिन्हं तिके ॥ समेछाये ॥ भ्वय छाये ॥

॥ समे छाये ॥

पिष्टो पिष्टो महा घोरा गुरूनाथं प्रशिद्धमे ॥

॥ भ्वय छाय् ॥

चौराशि व्यञ्जन सहित षडरस संयुक्त भक्ष भोजनादि सम्प्रढोषयामि ॥

॥ कोलाखय् च्वंगु ना त्वंके ॥

ॐ शुन्येमेव जगत सर्व सुन्यता करूनोद्भव हत्वा दूर्गती नांच सुखावत्यां लोक धातु मवाप्नुयात् ॥

॥ ग्वा ग्वय् छाये ॥

टाम्वुर पुंग फल मेघ समुद्र स्फरण समय हूं ॥

तत् सर्क कृत्य तण्डुल प्रेक्षामी पिता पिण्डम स्वधा ॥

पितांमह नामनेन स्वधा ॥ वाज्या ॥

प्रपितां मह नामनेन स्वधा ॥ तापा वाज्या ॥

॥ विकल पिण्ड धय ॥

यचाश्मीन कुले जाता अपुत्रायच वान्धवा आम गद्वा विरूपाच जातां जाते कुलोद्भव भूमौ दपतु नप नयण्तु त्रिप्तायांतु परागति संस्कार हिन मार्ग स स्व: धनाय काकादिकाकस पिण्ड स्वानादि स्वानस पिण्ड विकलस पिण्डम ददामी भ्यो स्वधा ॥

॥ छक्व छक्व तँ हय ॥

संघस्य ॥ संघस्य ॥ संघस्य भ्यो स्वधा ॥

॥ कोलाखय ल्हा सिले ॥ लँ:भ्या क्या तिति याये ॥

I ॐ नमो भगवते सर्व दुर्गती परि शोधन राजाय तथागता यार्हते सम्येक सम्वुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ शोधने शोधने विशोधने विशोधने शुद्धे विशुद्धे सर्व पाप विशुद्धे सर्व कर्मा वरण विश्वंधने स्वधा ॥

॥ जलं स्नान याके ॥

कंकनी २ रोचनी २ तृलोचनी २ प्रातनि २ अमोघा मोघ प्रतिहत २ सर्व पाप क्षयकरिय स्वधा ॥

॥ घ्य, कस्ती, दुरु, थौ स्नान याके ॥

स घृत समधु दधि दुग्ध सखरा सर्वरा सर्वत समासा सर्व कृतसित वज्रि काय विद्येते पदाश्यामी तत् सर्क कृत्य तण्डुल प्रेक्षामी पीता पिण्डम् स्वधा॥

॥ पञ्च पचार पूजा सिन्ह निके ॥

ॐ सर्व वित सर्व पाप विश्व धनी महा वज्रोद्भव गन्ध केतु गन्धा पारमिता गन्ध पूजां मेघ समुद्र प्फरण समय हूँ ॥

॥ स्वांन छाय ॥

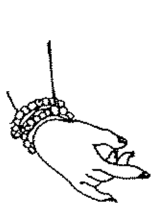
ॐ सर्व वित सर्व पाप विश्व धनी महा वज्रोद्भव पुष्प केतु पुष्पा पारमिता पुष्प पूजा मेघ समुद्र प्फरण समय हूँ ॥

॥ वस्त्र छाय ॥

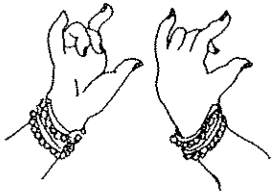
ॐ सर्व वित सर्व पाप विश्व धनी महा वज्रोद्भव वस्त्रा लंकार वस्त्र पूजांमेघ समुद्र प्फरण समय हूँ ॥

॥ दधि नैवद्य छाय ॥

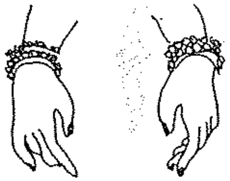
ॐ सर्व वित सर्व पाप विश्व धनी महा वज्रोद्भव दधि नैवद्य खाज्य भोज्य क्षान्ती पारमिता ॥ दधि नैवद्य फल पूजा मेघ समुद्र प्फरण समय हूँ ॥



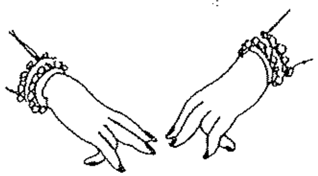
ॐ वज्रवीणे हुँ



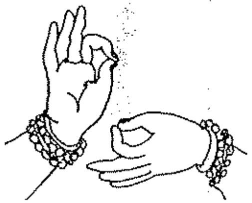
ॐ वज्रवंशे वां



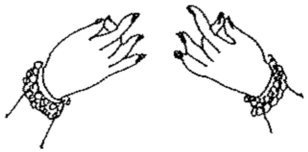
ॐ वज्रमृदङ्गे ह्रीं



ॐ वज्रमुरजे अः



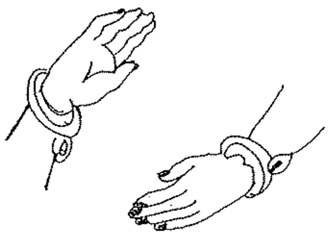
ॐ वज्रलास्ये हुँ



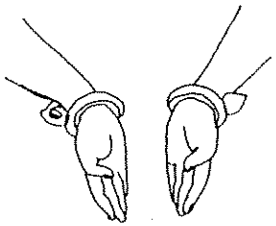
ॐ वज्रमाले त्रां



ॐ वज्रगीते ह्रीं



ॐ वज्रनृत्ये अः



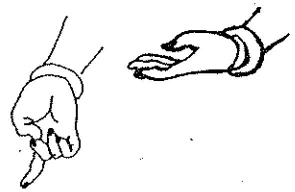
ॐ वज्रपुष्पे हुँ



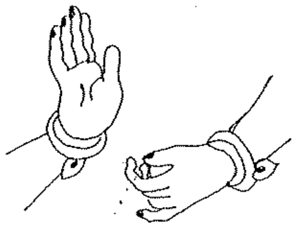
ॐ वज्रधूपे त्रां



ॐ वज्रावलोकिते ह्रीं



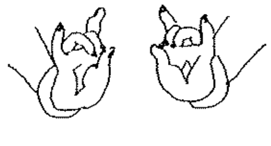
ॐ गन्धवज्रे अः



ॐ वज्रादर्शने हुँ



ॐ रसवज्रे वां



ॐ स्पर्शवज्रे ह्रीं



ॐ धर्मधातुगर्भे अः

॥ धनेचा स्वां छाये ॥

मुणि मुणि महामुणि धर्मचक्रं प्रवर्तकं त्रिधातुकं जगत सर्व शोधयत सर्व दुर्गति ॥

॥ विर्सजन याय् ॥

कृत्वो व सर्व सत्वार्थ सिध्दीं दत्वा यथानुगा गच्छध्वं वुद्ध विषय पुनराय गमनायच ध्यानं गच्छद्वं पितृ देवता सो सो स्थानं प्रवेषयत विसर्जनम् ॥

॥ पिण्ड कोलास तये ॥ गति विये ॥

अन्द जावा जरायु जावा सस्वेड जावा उप पादुकावा रूपिनो वा नाम संगीनौवा सर्वते सत्वा मया महा मुद्रा मन्त्र पदा प्रतिस्था पई तव्या सुखावत्यां लोक धातु मवाप्नुयात ॥

॥ खुसि चुइके छवय ॥

क्वचाल

आकर्षण मुद्रा



ॐ वज्राङ्कुश जः



ॐ वज्रपाश हूं



ॐ वज्रस्फोट वं



ॐ वज्रावेश हो: